ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

# बाँदा के नवाबों का सामाजिक समरसता के उन्नयन में योगदान

**डॉ0 कृष्ण पाल**
प्रवक्ता, इतिहास
एकलव्य महाविद्यालय, बाँदा, उ0प्र0

ऐतिहासिक तथा भौगोलिक रूप से बाँदा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक इकाई का सदैव एक हिस्सा रहा है। बाँदा जनपद भौगोलिक रूप से यमुना नदी द्वारा निक्षेपित मैदान में विस्तारित है। जनपद के दक्षिणी भाग में विन्ध्याचल श्रणी की पहाड़ियाँ पायी जाती हैं भूगर्भ शास्त्र की दृष्टिकोण से बाँदा में प्राचीनतम संरचनायें पायी जाती है जो ग्रेनाइट एवं नीस की चट्टानों से पहचानी जाती है। जनपद की संरचना के निर्माण में नदियों के निपेक्ष का प्रमुख महत्व है यमुना तट पर स्थित बाँदा जनपद के राजापुर तथा बाँदा जनपद के दक्षिण में स्थित चित्रकूट क्रमशः 102.6 मी0 तथा 129.9 मी0 सागर तल से ऊँचाई पर स्थित है यह अन्तर नदी निक्षेपों के कारण उत्पन्न होता है। यमुना, केन, बागै, पयसनी, इत्यादि नदियाँ बाँदा जनपद में बरसाती नालों के साथ कटाव करती है, तथा इनका निक्षेप बाँदा के धरातल को विशिष्ट स्वरूप प्रदान करते है। केन, यमुना के बाद बाँदा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी है जो मध्य प्रदेश के रायसीन जनपद में बरखेड़ा नामक स्थान से उत्पन्न हुयी है। यह नदी सागर, छतरपुर आदि जिलों से प्रवाहित होती हुयी चिल्ला घाट पर यमुना से मिलती है। उरमिल तथा चन्द्रावल इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है। केन नदी ने बाँदा जनपद के अधिवास को सर्वाधिक प्रवाहित किया है। इस नदी के व्यापक प्रभाव के कारण नदी तट पर अनेक नगरों का जन्म ऐतिहासिक कालक्रम में हुआ बाँदा जनपद में रनगढ़, सिहुड़ा, भूरागढ़, जसपुरा, के दुर्ग एवं गढ़ियाँ का निर्माण केन नदी तट पर हुआ। बाँदा नगर के विकास में केन नदी के जल प्रवाह में सतत् योगदान दिया। बाँदा जनपद अपने साथ अनेक पुरातात्विक सामग्रियों को समेटे हुये है। पैलियोलिथिक तथा नियोलिथिक काल में भारत के दूसरे भागो की भांति यहाँ भी मानव अधिवास प्रारम्भ हुआ। ब्रिटिश पुरातत्वविदों ने 1882 में प्रस्तर बाणग्र तथा अन्य वस्तुयें जनपद में प्राप्त थी तथा इस तथ्य को प्रमाणित किया। महा जनपद काल में बाँदा जनपद को कालिंजर के नाम पर जाना गया क्योंकि यह एक प्रसिद्ध तीर्थ था। जनपद का इतिहास मुख्य रूप से महाजनपद के पश्चात ही प्रारम्भ होता है। जब मौर्यो ने इसे अपनी सत्ता का भाग बनाया। कालिंजर कालान्तर में तीर्थ के स्थान पर एक दुर्ग के रूप में प्रसिद्ध हो गया। कल्चुरि बाँदा जनपद में ऐसे प्रथम शासक थे जिन्होनें 'कालिंजर पुरबराधीश्वर' की उपाधि सर्वप्रथम धारण की। कालिंजर पर कल्चुरि के अतिरिक्त गुप्त शासकों, वर्धनवंश तथा अन्य क्षत्रिय राज्यवंशों का शासन रहा परन्तु जनपद में सर्वाधिक शक्तिशाली सत्ता सर्वप्रथम चन्देल शासकों ने स्थापित की। जिसने कालिंजर को अपना शासन केन्द्र बनाकर तीन शताब्दियों से अधिक शासन किया। धंग, विद्याधर, मदन वर्मन, परमर्दिदेव, प्रसिद्ध चन्देल शासक हुये। 1202 में कालिंजर सुल्तानों के अधीन हो गया। पुनः 1569 तक चन्देलों तथा दिल्ली के सुल्तानों के मध्य कालिंजर पर अधिकार को लेकर कई बार संघर्ष हुये अकबर से लेकर औरंगजेब तक कालिंजर

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

मुगल केन्द्र बना रहा। बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध शासक महाराजा छत्रसाल बुन्देला ने कालिंजर को जीत कर मुगलों के समक्ष चुनौती प्रस्तुत की। बाँदा में बुन्देला सत्ता का अन्त मराठा सेनापति अलीबहादुर प्रथम ने किया। अलीबहादुर प्रथम मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम तथा मस्तानी का पौत्र था। शोध में नवाबी शासन में सामाजिक परिदृश्य एवं आर्थिक विकास का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। साथ तत्कालीन समाज पर नवाबी के प्रभाव का अनुशीलन किया गया है। बाँदा में नवाबी की स्थापना एवं विकास की चर्चा की गयी है। बाँदा में नवाबी की स्थापना की पृष्ठभूमि 1729 में बुन्देलखण्ड में मराठों के हस्तक्षेप से बनो जब महाराजा छत्रसाल बुन्देला की अपील पर मराठा सेनापति बाजीराव प्रथम ने उन्हे सहायता प्रदान की तथा इलाहाबाद के मुगल सूबेदार मुहम्मह खाँ बंगश को हराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। छत्रसाल ने इस सहायता के बदले बाजीराव को अपना तृतीय पुत्र मानकर अपना एक तिहाई राज्य बाजीराव को सौंप दिया तथा जनश्रुति के अनुसार मस्तानी नामक नृत्यागन बाजीराव को भेंट की इस अध्याय में मस्तानी की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विचारों का परीक्षण किया गया है। इन विद्वानों में कैप्टन डब्ल्यू0आर0पॉग्सन, गोविन्द सखाराम सरदेशायी, विल्यिम इरविंग, बी0डी0गुप्ता, पारसनीस तथा मराठी स्रोत बखर के विवरण का परीक्षण किया गया है। मस्तानी के मुस्लिम होने के कारण मराठा तन्त्र में बाजीराव का विरोध हुआ था। मस्तानी तथा बाजीराव प्रथम की मृत्यु, 1740 में महाराष्ट्र में हुयी। अपने समय के महान याद्धा बाजीराव तथा नृत्यागंना मस्तानी के अमर प्रेम की गाथायें महाराष्ट्र में जनश्रुतियों में प्रचलित है। पूना के समीप पाबल में मस्तानी का मकबरा उसकी अन्तिम स्मृति है। बाजीराव–मस्तानी के एक मात्र पुत्र के रूप में शमशेर बहादुर प्रथम ने उत्तर भारत में 1752 से 1761 तक अपनी तलवार का जौहर दिखाया। शमशेर बहादुर प्रथम ने पानीपत के तृतीय युद्ध में असाधारण वीरता का परिचय दिया तथा वीरगति को प्राप्त हुआ। शमशेर बहादुर प्रथम के एक मात्र पुत्र के रूप में अलीबहादुर प्रथम ने अपनी योग्यता युवा होने पर सिद्ध किया 1787 तक अलीबहादुर का कोई महत्वपूर्ण उल्लेख प्राप्त नहीं होता परन्तु 1787 में महादजी सिंधिया के सहायता के निमित नियुक्त किया गया। अलीबहादुर प्रथम नाना फडनवीस के प्रति वफादार था तथा नाना फडनवीस अलीबहादुर प्रथम महादजी सिंधिया से अधिक विश्वास करता था। नवम्बर 1788 में अलीबहादुर प्रथम ने उत्तर भारत में मथुरा पहुंचकर माहादजी सिंधिया से भेंट की उत्तर भारत में अलीबहादुर प्रथम को पहली महत्वपूर्ण सफलता 19 दिसम्बर 1788 को प्राप्त हुयी जब उसने मुगल विद्रोही गुलाम कादिर को बन्दी बना लिया। गुलाम कादिर ने पानीपत के तृतीय युद्ध के बाद मुगल बादशाह शाहआलम को यातना देते हुये अन्धा बना दिया था। अलीबहादुर प्रथम ने पूना दरबार से सहमति मिलने के पश्चात बुन्देलखण्ड के गुसाई नेता हिम्मत बहादुर के साथ गठबन्धन बनाया तथा बुन्देलखण्ड एवं रीवा पर अभियान किया। 1791 मे अलीबहादुर प्रथम ने हिम्मत बहादुर गुसाई की सहायता से अजयगढ़, बाँदा, पन्ना तथा रीवा पर

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

अधिकार कर लिया ये अधिकार क्रमश : 1792 से 1793 के मध्य किये गये। जबकि रीवां पर अधिकार दो बार 1796 तथा 1798 में आंशिक रूप में किया गया। अलीबहादुर की महत्वाकांक्षा ने तथा हिम्मतबहादुर के समर्थन ने अलीबहादुर को बाँदा में नवाबी स्थापना करने में साहस प्रदान किया। सन् 1800 में कालिंजर के प्रसिद्ध दुर्ग को अलीबहादुर तथा हिम्मतबहादुर की सेनाओं ने घेर लिया परन्तु अलीबहादुर का ये अभियान 1802 में उसकी मृत्यु तक सफल नहीं हुआ 28 अगस्त 1802 को अलीबहादुर की मृत्यु कालिंजर में हो गयो। उसकी मृत्यु पर उसके साले गनीबहादुर ने नवाबी के अधिकार प्राप्त कर लिये। पर ये सत्ता अल्पकालिक रही क्योंकि पूना से अलीबहादुर प्रथम का पुत्र शमशेर बहादुर द्वितीय नवाबी प्राप्त करने के लिये बाँदा आया। 1802 में ही शमशेर बहादुर द्वितीय बाँदा का नया नवाब बना परन्तु उसकी स्वतन्त्र नवाबी अधिक समय नहीं चल सकी क्योंकि पेशवा ने अंग्रेजों से वंसीन की सन्धि (31 दिसम्बर 1802) कर ली थी। अंग्रेजों ने बाँदा पर दबाव बढ़ा दिया इस कार्य में हिम्मत बहादुर गुसाई ने पाला बदलते हुये अंग्रेजों की मदद की। उत्तर भारत में इस काल में अंग्रेजों को महत्वपूर्ण सफलता मिली जिसके परिणाम स्वरूप रघुजी भोंसले, और दौलतराव सिंधिया, दोनों को ही विवश होकर क्रमश : देवगॉव (17 दिसम्बर 1803) और सुरजी अर्जुनगॉव (30 दिसम्बर 1803) की सन्धियाँ अंग्रेजों से करनी पड़ी। बुन्देलखण्ड भी अंग्रेजों के नियंत्रण मे था। अतः अंग्रेजों ने अब पेशवा से माँग की कि सहायक सन्धि के अन्तर्गत सेना के रख–रखाव के लिये जो प्रदेश उन्हें पेशवा ने दक्षिण में दिये है, उनको पेशवा के अधीन बुन्देलखण्ड में नवाब अली बहादुर के प्रदेशों से बदल दिया जाय पेशवा बाजीराव द्वितीय ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और बेसीन की सन्धि की एक और पूरक सन्धि में बुन्देलखण्ड पर नियंत्रण हेतु दो धारायें जोड़ी गयी। कैप्टन वेली को बाँदा समेत पूरे बुन्देलखण्ड का पोलिटिकल एजेण्ट बनाया गया तथा 2 फरवरी 1804 को शमशेर बहादुर ने पेंशन के बदले अपने समस्त दावे छोड़ दिये। नवाब शमशेर बहादुर द्वितीय ने अपनी शानौ–शौकत बनाये रखी तथा यूरोपीय पद्धति पर कैप्टन बुरैल के नेतृत्व में अपनी सेना का गठन किया। 1823 में उसकी मृत्यु के बाद सत्ता नवाब जुल्फिकार अली को प्राप्त हुयी जिसने 1849 तक शासन किया। बाँदा की प्रसिध्द जामा मस्जिद का निर्माण नवाब जुल्फिकार अली ने करवाया। 1849 में नवाब अली बहादुर द्वितीय नवाब जुल्फिकार अली का उत्तराधिकारी बना। जिसने प्रारम्भ में अंग्रेजों का साथ देने के बाद विद्रोहियों को 1857 में नेतृत्व प्रदान किया। 14 नवम्बर 1858 को बुन्देलखण्ड के विद्रोही नेता के रूप में अलीबहादुर ने आत्म समर्पण कर दिया तथा इंग्लैण्ड की महारानी के प्रति अपनी आस्था जतायी।

नवाबों के शासन काल में बाँदा के सामाजिक परिदृश्य की चर्चा करना आव" यक है। 1848 तथा 1853 के जनगणना अनुमानों के अनुसार शामिल किया गया हैं। जिले में 94% जनसंख्या हिन्दुओं की थी। इस जनसंख्या में से 85% किसी विशेष सम्प्रदाय से जुड़े हुये नही थे। हिन्दू जनसंख्या में 2.5% शैव,

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

5% वैष्णव, 2% लिंगापत सम्प्रदाय के अनुयायी थे। हिन्दू 117 से अधिक जातियों में विभाजित थे। ब्राम्हण, राजपूत, चमार, अहीर, काछी, कोरी, केवट, कुर्मी जातियाँ मिलकर कुल हिन्दू जनसंख्या का 60% थी। यह आंकड़ा नवाब अलीबहादुर द्वितीय के कार्यकाल का है। नवाब शमशेर बहादुर द्वितीय तथा नवाब जुल्फिकार अली के कार्यकाल के आंकड़े उपलब्ध नहीं है अतः 1853 के आकड़ों से पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। हिन्दू जनसंख्या म ब्राम्हण 15. 5% या 92397 थे। ब्राम्हणों का वर्चस्व चित्रकूट के पवित्र तीर्थ के आस पास था। बांदा पैलानी तथा बदौसा में इनकी जनसंख्या अधिक थी तथा ये विभिन्न स्थानों पर भूमि स्वामी थे। ब्राम्हणों में जुझौतियों तथा कान्यकुब्ज ब्राम्हणों की संख्या लगभग बराबर थी। राजपूत या ठाकुर जनसंख्या में लगभग 8.3% का योगदान करते थे। भूमि अधिकारों के संदर्भ में राजपूत सशक्त थे। बाँदा में संख्या के हिसाब से बैस राजपूत सर्वाधिक थे। बैस राजपूत रायबरेली (अवध) की त्रिलोकचन्दी शाखा से सम्बन्धित थे। संख्या की दृष्टि से दिखित राजपूत दूसरे स्थान पर थे जो कि परम्परानुसार बैस राजपूतों से उच्च स्थान पर आते थे। दिखित राजपूतों की अधिकांश जनसंख्या पैलानी, सिमौनी, बेंदा, जौहरपुर तथा जसपुरा क्षेत्र में निवास करती थी। दिखित राजपूतों का मूलस्थान अवध में 'कोट झलोखर' था। आरंगजेब के शासनकाल में दिखित राजपूतों के नेता राव रामकिशन ने मनसबदारी में स्थान प्राप्त किया था। दिखित राजपूतों ने 1857 के विद्रोह में सक्रिय भूमिका निभाई थी। दिखित राजपूतों के अतिरिक्त पवॉर, जनवार, रघुवंशी, मौहर, बागड़ी, गौर, गौतम, बाँदा के प्रमुख राजपूत जातियां थी इनके अतिरिक्त बहुत कम संख्या में चन्देल, बुन्देला, चौहान, बिसेन तथा कछवाह भी बाँदा जनपद में थे। बाँदा जनपद में अहीर कुल हिन्दू जनसंख्या का 9.9% थे। कैडेल के सेटेलमेन्ट के अनुसार बाँदा में 5% भूमि इस जाति के पास थी। कोरी जनसंख्या म अहीरों के पश्चात थे कुर्मी यद्यपि कुल जनसंख्या का 4% थे तथापि 10% जमीनों पर इस जाति का अधिकार था। व्यापारी वर्ग बाँदा नगर में केन्द्रित था। बाँदा के नगर सेठ के रूप में उदयकर्ण का नाम प्राप्त होता है। व्यापारियों में अग्रवाल, अग्रहरि, केसरवानी, प्रमुख थे। बबेरू के व्यापारिक क्षेत्र में रस्तोगी व्यापारी प्रमुख थे। बाँदा नगर में कायस्थ पर्याप्त संख्या में थे। जिसमें जदोराम कायस्थ का परिवार कानूनगो परिवार के नाम से जाना जाता था। कायस्थ प्रायः तहसील के कर्मचारियों के रूप में कार्य करते थे। अन्य हिन्दू जातियों में कहार, कुम्हार, भरभूंजा, बढ़ई, लोहार, नाई, इत्यादि शामिल थे। उपरोक्त के अतिरिक्त कलार, खटिक, कोल, गोंड़ भी पर्याप्त संख्या में थे।

1853 में मुस्लिम जनसंख्या बाँदा में पर्याप्त मात्रा में थी यद्यपि मुस्लिम जनसंख्या का केन्द्रीकरण बाँदा नगर में अधिक था तथापि धर्मान्तरित मुस्लिम गोरवां, गौरीखाड़पुर, अदरी, सादीमदनपुर, हरदौली इत्यादि प्रमुख गांव में निवास करते थे। बाँदा में कुल मुस्लिम जनसंख्या का 98.5% सुन्नी मुसलमान थे तथा 1.5% शिया थे। मुस्लिमों में शेख, सैयद, राजपूत, पठान, तथा मुगल

सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। शेख कुल मुस्लिम जनसंख्या का 46.4% थे। शेख जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा बाँदा तहसील में केन्द्रित था। शेख कुरैशी तथा सिद्दीकी उपशाखाओं में विभक्त थी। पठान शेख जनसंख्या के बाद दूसरे स्थान पर थे तथा इनका भी केन्द्रीयकरण बाँदा तहसील में था। सैयद कुल मुस्लिम जनसंख्या का 7.4% थे। यमुना किनारे औगासी में केन्द्रित थे। अन्य मुस्लिमों में बेहना, जुलाहा, कस्साब, नाई, दर्जी, छीपी, चुरिहार, धोबी इत्यादि प्रमुख थे तथा इन जातियों के अतिरिक्त राजपूत मुस्लिम जो कि धर्मान्तरित मुस्लिम थे, पर्याप्त संख्या में मौजूद थे। बाँदा जनपद में व्यापारी वर्ग भी महत्वपूर्ण था। नवाबी शासन में सेठ किशनचन्द्र बाँदा नगर का सबसे बड़ा बैकर था। प्रमुख सम्पन्न परिवारों की चर्चा की गयी है साथ ही इस्लाम के धर्मान्तरण के दृष्टान्त दिये गये है। शासन केन्द्रों के रूप में नवाबों के प्रमुख शक्ति केन्द्रों की चर्चा की गयी है। बाँदा में ईसाइयत के बढ़ते हुये प्रभाव तथा अंग्रेजी भाषा के प्रभाव को निरूपित किया गया है। बाँदा जनपद के सामाजिक वैविध्य पर प्रकाश डाला गया है सैयद मिस्कीन शाह तथा सैयद कमालुद्दीन शाह तथा अन्य सूफी सन्तों की चर्चा की गयी है। नवाबों के शासनकाल में बाँदा जनपद के आर्थिक जीवन के अज्ञात पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। चूंकि 1857 में विद्रोहियों ने अधिकांश भूराजस्व रिकार्ड को आग लगा दी थी अतः इनके अभाव में ब्रिटिश स्रोतों का सहारा लिया गया है अंग्रेजों ने विभिन्न क्रमागत भूराजस्व निधारणों में नवाबी पति के जामा रिकार्डो का आधार लिया था इस अध्याय में प्रमुख भूराजस्व क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है। कैप्टन बेली, अर्सकिन, बॉउचाय, स्कॉट, बेरिंग, कैम्पबेल तथा रीड, विलकिन्सन, फेन तथा बेग्बी, बेग्बीराइट के भूराजस्व बन्दोबस्तों के अज्ञात पक्षा पर प्रकाश डाला गया है। ब्रिटिश नियंत्रण में कृषि की गिरती हुयी दशा तथा कुटीर उद्योग धन्धों की चिन्ताजनक स्थिति का परीक्षण किया गया है नशीले पदार्थो पर कर आयकर के उपलब्ध आंकड़ों को प्रकाशित किया गया है। अकाल के कारण अनाजों में कीमत वृद्धि का परीक्षण किया गया है। प्रमुख व्यापारिक गतिविधियों के साथ–साथ बाँट, माप तथा मुद्रा प्रणाली का उल्लेख किया गया है। ब्रिटिश प्रभाव म उद्योग धन्धों में कमी का परीक्षण विभिन्न विद्वानों के विचारों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। नवाबों के शासनकाल में आर्थिक एवं सामाजिक विकास का आलोचनात्मक विकास किया गया है। नवाबों द्वारा बाँदा नगर में स्थापत्य कला तथा ललित कलाओं के संरक्षण पर प्रकाश डाला गया है। नवाब शमशेर बहादुर द्वितीय ने बाँदा के नगरीकरण में अभूतपूर्व योगदान दिया तथा कई नये इलाके बसाये इन इलाकों में कलाकारों का इलाका कलावन्तपुरा या कलामतपुरा आज भी मौजूद है। नवाब शमशेर बहादुर द्वितीय के उत्तराधिकारी के रूप में नवाब जुल्फिकार अली बहादुर ने अपनी रुचियों के अनुसार जनकल्याणकारी कार्य करवायें। जुल्फिकार अलीबहादुर ने बाँदा नगर को नया आयाम प्रदान किया बाँदा नगर में अनेक तालाब एवं सराय बनवाने का श्रेय नवाब जुल्फिकार अलीबहादुर को है। जुल्फिकार अली ने बाँदा की जामा मस्जिद दिल्ली की

जामा मस्जिद की तर्ज पर बनवायी। नवाब जुल्फिकार अली ने बाँदा नगर के पर्यावरण के प्रति सजगता दिखाते हुये अनेक प्रसिद्ध बाग लगवाये। जिनमें गुलाबबाग, पोड़ाबाग, ऐशबाग, बेरीबाग आज भी शेष है। नवाब जुल्फिकार अलीबहादुर ने हिन्दुस्तानी संगीत का अच्छा जानकार या बल्कि संगीतकारों का महान सरंक्षक था। नवाब जुल्फिकार अली बहादुर ने उर्दू साहित्य को संरक्षण प्रदान किया। अलीबहादुर द्वितीय एक आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी था। तथा बाँदा की जनता में बेहद लोकप्रिय था जैसे नवाब जुल्फिकार अली ने सैयद इदरीश मगरिबी, सआदत खाँ रंगीन, मौलाना, खरम अली, मुनीर शिकोहाबादी, मुहम्मद यार खाँ यकती, बेदली को बाहर से बुलाकर बाँदा में बसाया था। नवाबी शासन में मजदूरी की विभिन्न दरों पर तथा दरों की चर्चा की गयी है। धनाड्य साहूकारों के कृत्यों का आलोचनात्मक अनुशीलन किया गया है। नवाबी शासन के एक मात्र तत्कालीन प्राथमिक स्रोत पॉग्सन के ग्रंथ के विवरणों से मिलता है। बाँदा के नवाबों के सामाजिक योगदान उल्लेखनीय रहा है। नवाबों ने बाँदा में सामाजिक समरसता का संचार किया। हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के आपसी सहयोग के बढ़ाने में नवाबों ने योगदान किया। बाँदा का रामलीला मैदान जमीदार मसूरुद्जमा द्वारा दान किया गया था। नवाब टैंक पर कजलियों के मेले में नवाब तथा उसकी बेगमें बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते थे। इस प्रकार सामाजिक समरसता को बनाये रखने में नवाब अहम भूमिका अदा करते थे। इसी तरह मुस्लिम त्यौहारों खासतौर से मुहरम के महीनें में यहाँ के हिन्दू मुस्लिम निवासियों की एकता देखने को मिलती थी। नवाब अलीबहादुर प्रथम के समय में केरल के मोपलाओं का एक फौजी दस्ता आया था जिसका कमाण्डर अधिकारी मिस्टर बर्न एक फ्रांसीसी अधिकारी था जिसके नाम से मोपलाओं का बनवाया हुआ एक भव्य इमामबाड़ा ;बर्न साहब का इमामबाड़ा मध्य शहर में मुहल्ला गूलरनाका में मगरिबी साहब के हाते के पास था जिसके भवन को 1858 को अंग्रेजी फौजियों ने गोलाबारी करके ध्वस्त कर दिया था। अब इसी जगह शहर के मन्सूरी बिरादरी के लोगों ने दूसरा इमाम बाड़ा बना लिया है जो बेहनों के इमामबाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। ग्रामीण क्षेत्रों के प्रमुख सांस्कृतिक तत्वों का विशद विवेचन किया गया है जिसमें मेलो, स्थानीय त्योहारों को सभी धर्म के लोग सद्भावनापूर्वक मनाते थे। नवाबी शासन काल में प्रचलित आभूषणों तथ अस्त्र–शस्त्रों का विवरण मिलता है। अन्त में बाँदा के नवाबी शासन पर तथा सामाजिक समरसता में उनके योगदान का विभिन्न समकालीन एवं आधुनिक विद्धनों के विचारों की गहन अध्ययन की आव" यकता है।

बाँदा में नवाबी शासन में सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों पर सर्वागींण शोध एवं विश्लेषण युक्त प्रस्तुतीकरण है। विभिन्न नवाबों के शासनकाल में यथा सम्भव स्रोतों की उपलब्धता के आधार पर अनुशीलन करने का प्रयत्न किया गया है। बाँदा में नवाबों ने सामाजिक समरसता की ऐसी गंगा बहायी जो आज भी अहर्निश रूप में विद्यमान है। बाँदा में वर्तमान पोड़ी नवाब शासन से स्वाभिमान तथा स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ती रहेगी।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

**अंग्रेजी**–आर्क्योलोजिकल सर्वे रिपोट्स, सम्पादक – जैस बगैस एवं फ्यूहरर, नई दिल्ली, 2000
"एचिसन, सी0यू0, 'ए कलेक्शन आफ ट्रीटीज एंगेजमेन्ट्स एण्ड सनद्स', कलकत्ता, 1909,
"बिंगले, कैप्टन ए0एच0 'हैण्डबुक आन राजपूत्स', प्रथम प्रकाशित, लन्दन 1899, पुनर्मुद्रित लो प्राइस पब्लिकेशंस, दिल्ली, 1999
"बोस, निभाई सदन, 'ए हिस्ट्री आफ चन्देलाज आफ जेजाकभुक्ति', कलकत्ता, 1858
"डफ, ग्रैण्ड, ''हिस्ट्री आफ द मराठाज'', भाग–2 एशोशियेटड पब्लिसिंग दिल्ली 1978।
"फारेस्ट जी0डब्ल्यू0 ''दि इंण्डियन क्यूटिनी'' सुपरिनटेनडेन्ट गवर्नमेन्ट प्रेस कलकत्ता, 1912, एपेनडिक्स जी0एच0।
"फॉरेन पोलिटिकल कंसल्टेशन, 1 अप्रैल 1885/59 न 253–254–255 ;नेशनल आर्काइव्स, नयी दिल्ली में सुरक्षित)
"ग्रियर्सन, जॉर्ज, 'लिग्विस्टिक सर्वे इण्डिया', खण्ड–1, जोन्स, डी0, 'एन आउटलाइन आफ इंग्लिश फोनेटिक्स', एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका,
"मजूमदार आर0सी0 द सिपॉय क्यूटिनी एण्ड द रिवोल्ट ऑफ 1857'', कलकत्ता 1957
"पॉग्सन, डब्ल्यू0आर0, 'ए हिस्ट्री ऑफ बुन्देलाज', प्रथम प्रकाशित कलकत्ता 1828, पुनः प्रकाशित बी0आर0 पब्लिसिंग कारपोरेशन, नयी दिल्ली, 1974
"रिजवी एस0ए0ए0, ''फ्रीडम स्ट्रगल इन उ0प्र0'' सूचना विभाग लखनऊ 1959
"सरकार, जदुनाथ, ''फाल आफ द मुगल एम्पायर'', भाग–3 एम0सी0 सरकार, कलकत्ता, 1052
"सरकार जदुनाथ, हिस्ट्री आफ औरंगजेब', कलकत्ता, 1924
"स्लीमैन, डब्ल्यू0एच0 'रैक्बल्स एण्ड रिकलेक्शन ऑफ इन इंण्डियन आफीसियल'' लन्दन 1844,

**हिन्दी**–दैनिक जागरण, 2 जनवरी 1978 (एहसान आरावा बादवी के पास से संकलित)
"सिंह दीवान प्रतिपाल, ''बुन्देलखण्ड का इतिहास'' काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी 1929।
**मराठी**–आप्टे, दत्तोपन्त, 'महाराष्ट्र इतिहास मंजरी' चित्रशाला प्रकाशन पुणे 1948
"पारसनीस, दत्तात्रेय बलवंत, 'झाँसी की रानी' साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग संवत 1997
"श्री निवासन, सी0के0, 'बाजीराव फस्ट द ग्रेड पेशवा', एशिया पब्लिशिंग हाउस बम्बई, 1949
**उर्दू**– एहसान, आवारा, 'मस्तानी कुँवर' बर्ग अकादमी छावनी, बाँदा
"मगरिबी, सैयद इलियास, ''तवारीख बुन्देलखण्ड –ए– बुन्देलखण्ड' प्रथम प्रकाशित बाँदा – 1978
"श्यामलाल, मुंशी, 'तवारीख–ए–बुन्देलखण्ड', नौगाँव, 1884
**गजेटियर**–एटकिंशन ई0टी0, 'स्टेटिसटिकल डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाण्उट आफ नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज, खण्ड–1 ;बुन्देलखण्डद्ध इलाहाबाद, 1874
" ब्रोकमैन, डी0एल0ड्रेक 'डिस्ट्रिक गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेस आफ आगरा और अवध–बाँदा ए गजेटियर', इलाहाबाद, 1907
" इलियट, सर हेनरी एम0 'मेमायर्स ऑन द हिस्ट्री फोकलोर एण्ड डिस्ट्री ब्यूशन ऑफ द रेसेज ऑफ नार्थ वेर्स्टन प्रोविन्सेज आफ इण्डिया', ट्रबनर एण्ड कम्पनी लन्दन, 1859
"कैडेल, ए0 ''सैटलमेन्ट रिपोर्ट आफ बाँदा डिस्ट्रिक्ट' नार्थ वेस्ट फ्रटियर एण्ड अवध गवर्नमेन्ट प्रेस इलाहाबाद 1881
"लुआर्ड, कैप्टन सी0ई0, 'प्रोविन्सियल गजेटियर्स आफ इण्डिया' सेन्ट्रल इण्डिया एजेन्सी लखनऊ, 1907, खण्ड–6ए